अध्याय

16

स्पीति में बारिश

कृष्ण नाथ

© NCERT not to be republished

जीवन परिचय

जन्म – सन 1934

स्थान – वाराणसी उत्तर प्रदेश

निधन – 2016

शिक्षा – एम. ए. (अर्थशास्त्र) काशी विश्वविद्यालय उसको संस्कृत, हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी सहित कई भाषाओं का ज्ञान था।

शिक्षा के बाद समाजवादी आंदोलन और बौद्ध दर्शन की ओर उनका झुकाव हो गया। बौद्ध दर्शन में उन्होंने अच्छी जानकारी प्राप्त की पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनका योगदान सराहनीय रहा है वे कई वर्षों तक हिंदी के साहित्यिक पत्रिका कल्पना के संपादन मंडल में रहे और मैनकाइंड का भी कुछ वर्षों तक संपादन किया।

सम्मान – लोहिया सम्मान

प्रमुख रचनाएं

लद्दाख में राग- विराग, किन्नर धर्मलोक, स्पीति में बारिश अरुणाचल यात्रा, हिमालय यात्रा, पृथ्वी परिक्रमा, बौद्ध निबंधावली। इसके (अतिरिक्त) उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी के कई पुस्तकों का संपादन भी किया।

साहित्यिक विशेषताएं

1. कृष्ण नाथ ने अपनी रचनाओं में यात्रा-वृतांत जैसी विधा को अनूठी विलक्षणता प्रदान की है। राजनीति, पत्रकारिता और अध्यापन की प्रक्रिया से गुजरकर वे बौद्ध-दर्शन की ओर मुड़े। बौद्ध-दर्शन पर कृष्णनाथ जी ने काफी कुछ लिखा है। उन्होंने ना केवल स्थान विशेष की यात्रा की अपितु उस स्थान से जुड़ी स्मृतियों को विशेष रूप से चित्रित किया है।

2. कृष्णनाथ ने हिमालय की यात्रा के दौरान उन स्थानों को खोजा, जिनका संबंध बौद्ध-दर्शन और भारतीय मिथकों से है। यहीं उनकी यात्रा--वृत्तांत की अनूठी विधा चमककर सामने आई।

3. वे केवल पर्यटक की तरह यात्रा नहीं करते, बल्कि तत्ववेत्ता की तरह वहाँ का अध्ययन करते चलते हैं। वे उस स्थान से जुड़ी समस्त स्मृतियों को उघाड़कर सामने लाते हैं।

4. उनके यात्रा-वृत्तांतों में नवीनता है। वर्णित स्थानों की यात्रा करने के बाद भी उनके यात्रा वृतांत पढ़ने के बाद नया अनुभव होने लगता है। उनकी यात्रा - वृतांत पढ़ने के बाद ही पाठक अपनी यात्रा को पूरा समझते हैं।

पाठ–सारांश

1. **स्पीति में बारिश एक यात्रा-** वृतांत है। इसमें यात्रा के दौरान किए गए अनुभवों, यात्रा-स्थल से जुड़ी विभिन्न जानकारियों का बारीकी से वर्णन किया गया है। लेखक ने इस पाठ में स्पीति की जनसंख्या, मौसम, फसल, जलवायु तथा भूगोल का वर्णन किया है। स्पीती

© JCERT not to be republished

एक दुर्गम क्षेत्र है। इस पाठ में स्पीति में रहने वाले लोगों के दुर्गम जीवन के कठिनाइयों का भी वर्णन किया है।

2. स्पीति, हिमाचल प्रदेश के लाहुल- स्पीति जिले की एक तहसील (जिला) है। ऊंचे—ऊंचे दर्रों व कठिनाइयों भरे रास्तों के कारण यहां पर पर्यटकों का पहुंच पाना काफी मुश्किल होता हैं।प्राचीन काल में स्पीति स्वतंत्र रही फिर मध्ययुग में लद्दाख मंडल, कश्मीर मंडल, बुशहर मंडल, कुल्लू मंडल और ब्रिटिश भारत के तहत भी यह स्वायत्त ही रही। यानि अपनी कठिन भौगोलिक स्थितियों के कारण स्पीति प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल व ब्रिटिश शासन तक हमेशा स्वतंत्र रही है। क्योंकि वहां पहुंचना किसी भी राजा व अंग्रजों के लिए अपने आप में बहुत बड़ा चुनौती भरा काम था।

3. जनसंख्या—

लेखक बताते हैं कि स्पीति की जनसंख्या लाहुल से भी कम है। 1901 की जनगणना के अनुसार स्पीति की जनसंख्या 3, 231 थी जबकि 1971 की जनगणना के अनुसार 7,196 थी। 1971 की जनगणना के अनुसार ही लाहुल और स्पीति, दोनों का कुल क्षेत्रफल 12,015 वर्ग किलोमीटर था।

इंपीरियल गजेटियर (ऑक्सफोर्ड, 1908, खंड 23) के अनुसार स्पीति का क्षेत्रफल 2, 155 वर्गमील है। इसके अनुसार स्पीति की जनसंख्या प्रतिवर्ग मील 4 से भी कम है यानि एक वर्गमील में 4 से भी कम व्यक्ति रहते हैं जबकि 1901 में यह प्रति वर्गमील 2 से भी कम थी यानि उस समय एक वर्गमील में 2 व्यक्ति भी नही रहते थे।

4. स्पीति का इतिहास व प्रशाशन—

लाहुल — स्पीति का प्रशासन ब्रिटिश राज से भारत को जस का तस मिला। सन 1846 में कश्मीर के राजा गुलाब सिंह ने इसे अंग्रेजों को दिया। अंग्रेज अपने साम्राज्य के दूरगामी हित के लिए लाहुल — स्पीति के जरिए तिब्बत के ऊन वाले क्षेत्रों में प्रवेश करना चाहते थे।

फिर एक साल बाद 1847 में लाहुल — स्पीति और कुल्लू को कांगड़ा जिले में मिला दिया गया। लद्दाख मंडल के दिनों में स्पीति का शासन एक नोनो द्वारा चलाया जाता था। नोनो की हैसियत एक द्वितीय दर्जे के मजिस्ट्रेट के बराबर थी, जो कुल्लू के असिस्टेंट कमिश्नर के नीचे कार्य करता था। हालाँकि स्पीति के लोग नोनो को ही अपना राजा मानते थे।

1873 में "स्पीति रेगुलेशन" पास हुआ जिसके तहत लाहुल और स्पीति को विशेष दर्जा दिया गया।इसीलिए यहाँ ब्रिटिश भारत का कोई कानून लागू नहीं होता था।

रेगुलेशन के अधीन प्रशासन के कुछ अधिकार नोनो को दिए गए जिसमें मालगुजारी इकट्ठा करना, छोटे-मोटे

© JCERT not to be republished

फौजदारी के मुकदमों का फैसला करना आदि शामिल था। इससे ऊपर के मामले वो कमिश्नर को भेज देता था।भारत की आजादी के बाद सन् 1960 में लाहुल-स्पीति को पंजाब राज्य के अंतर्गत एक अलग जिला बना दिया गया जिसका केंद्र केलंग में था। सन 1966 में जब हिमांचल राज्य बना तो लाहुल-स्पीति को उसके उत्तरी छोर का एक जिला बना दिया गया। यह देश का सबसे अधिक दुर्गम क्षेत्र है।

5. भौगोलिक स्थिति —

स्पीति 31.42 और 32.59 अक्षांश उत्तर और 77.26 और 78.42 पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। यह चारों ओर से ऊंचे -ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ है जिनकी औसत ऊंचाई लगभग 18,000 फीट है। ये पहाड़ स्पीति को पूरब में तिब्बत, पश्चिम में लाहुल, दक्षिण में किन्नौर और उत्तर में लद्दाख से अलग करते हैं।

भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र इतना दुर्गम है कि यहां के बारे में लोगों को यह सुनकर आश्चर्य होता है कि यहां लोग भी रहते हैं। यह क्षेत्र पूरे साल में लगभग आठ — नौ महीने पूरी दुनिया से कटा हुआ रहता है।

यहाँ की मुख्य घाटी, स्पीति नदी घाटी है। स्पीति नदी का उद्गमस्थल पश्चिम हिमालय में लगभग 16,000 फीट की ऊंचाईमें हैं। जहां से बहकर वह पूरब में तिब्बत होते हुए स्पीति तक पहुंचती है और फिर उसके बाद किन्नौर जिले में बहती हुई सतलुज नदी में जाकर मिलती हैं।लेखक थोड़ा स्पीति के पहाड़ों से भी हमारा परिचय कराते हैं। स्पीति के पहाड़ लाहुल से ज्यादा ऊंचे,नंगे और भव्य हैं। स्पीति, मध्य हिमालय की घाटी में स्थित हैं।

लेखक बताते हैं कि शिमला, मसूरी, नैनीताल, श्रीनगर, कुल्लू -मनाली, ये सभी क्षेत्र हिमालय का तलुवा (हिमालयी क्षेत्रों की शुरुवात से पहले के क्षेत्र) है। जबकि शिवालिक या पीर पंजाल क्षेत्र हिमालय की तलहटी (हिमालय का शुरूवाती हिस्सा या हिमालय का सबसे निचला भाग) है।

रोहतांग जोत को पार करने के बाद मध्य हिमालय शुरू होता है जिसमें लाहुल-स्पीति की घाटियां स्थित हैं। श्री कनिंघम के अनुसार लाहुल की समुद्रतल से ऊंचाई 10, 535 फीट है जबकि स्पीति की ऊंचाई 12, 986 फिट है यानि लगभग 13,000 फीट की औसत ऊंचाई है।हिमालयी पर्वत श्रेणियां में बसा है स्पीति।

स्पीति के उत्तर दिशा में "बारालाचा" पर्वत श्रेणी हैं जिसकी ऊंचाई लगभग 16, 221 फीट से लेकर 16, 500 फीट तक है। इस पर्वत श्रेणी की दो अन्य चोटियों की ऊंचाई 21, 000 फीट से भी अधिक है।

स्पीति के दक्षिण दिशा में "माने" पर्वत श्रेणी है। लेखक अनुमान लगाते हैं कि इस पर्वत श्रेणी का नाम बौद्धों के पवित्र मंत्र "माने'

© JCERT not to be republished

के नाम पर रखा गया है जिसकी ऊंचाई लगभग 21, 648 फीट बताई गई है। इसमें अलग — अलग ऊंचाई वाले कई और भी पर्वत श्रेणियों हैं।सब मध्य हिमालयी क्षेत्र हैं जिसमें स्पीति बसा हैं। इसके बाद बाह्य हिमालय शुरू होता है जिसकी एक चोटी 23, 064 फीट ऊंची बताई जाती है। लेखक कहते हैं कि यहां पर युवा पर्यटकों को आना चाहिए और यहां की ऊंची — ऊंची चोटियों को निहारना व प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठाना चाहिए।

6. ऋतु चक्र

लेखक आगे स्पीति के ऋतु चक्र के बारे में कहते हैं कि यहां पर सिर्फ दो ही ऋतुएं होती हैं। एक अल्पकालिक बसंत जो जून से सितंबर तक चलता हैं। दूसरा शीत ऋतु होती है यानी ठंड का मौसम। जुलाई माह में यहां का औसत तापमान 15 डिग्री सेंटीग्रेड और जनवरी में करीबन 8 डिग्री सेंटीग्रेड रिकॉर्ड किया गया है यानि यहाँ कड़ाके की ठंड पड़ती है।

वसंत में दिन गर्म तथा रात ठंडी होती है। शीत ऋतु की ठंड की कल्पना ही की जा सकती है। यहाँ वसंत का समय लाहुल से कम होता है। इस ऋतु में यहाँ फूल, हरियाली आदि नहीं आते। दिसंबर से मई तक बर्फ रहती है। नदी-नाले जम जाते हैं। तेज हवाएँ मुँह, हाथ व अन्य खुले अंगों पर शूल की तरह चुभती हैं।

यहाँ मानसून की पहुँच नहीं है।कालिदास की वर्षा यहां मध्य हिमालय में नहीं आती है।कालिदास को अपने 'ऋतु संहार' ग्रंथ में से वर्षा ऋतु का वर्णन हटाना होगा। उसका वर्षा वर्णन लाहुल-स्पीति के लोगों की समझ से परे है। वे नहीं जानते कि बरसात में नदियाँ बहती हैं,बादल बरसते हैं और मस्त हाथी चिंघाड़ते हैं। जंगलों में हरियाली छा जाती है और वियोगिनी स्त्रियाँ तड़पती हैं। यहाँ के लोगों ने कभी पर्याप्त वर्षा नहीं देखी। धरती सूखी, ठंडी व वंध्या रहती है।

स्पीति में एक ही फसल होती है जिनमें जौ, गेहूँ, मटर व सरसों प्रमुख है। इनमें भी जो मुख्य है। सिंचाई के साधन पहाड़ों से बहने वाले झरने हैं। स्पीति नदी का पानी काम में नहीं आता। स्पीति की भूमि पर खेती की जा सकती है बशर्ते वहाँ पानी पहुँचाया जाए। यहाँ फल, पेड़ आदि नहीं होते। भूगोल के कारण स्पीति नंगी व वीरान है।

7. वर्षा यहाँ एक घटना है। लेखक एक घटना का वर्णन करता है। वह काजा के डाक बंगले में सो रहा था। आधी रात के समय उन्हें लगा कि कोई खिड़की खड़का रहा है। उसने खिड़की खोली तो हवा का तेज झोंका मुँह व हाथ को छीलने-सा लगा। उसने पल्ला बंद किया तथा आड़ में देखा कि बारिश हो रही है। बर्फ की बारिश हो रही थी। सुबह उठने पर पता चला कि लोग उनकी यात्रा को शुभ बता रहे थे। यहाँ बहुत दिनों बाद बारिश हुई।

© NCERT not to be republished

शब्दार्थ

योग- मिलाप।

आकस्मिक- अचानक हुई घटना।

अलंध्य- जो पार न किया जा सके।

संचार- संदेश भेजने का साधन।

अवज्ञा- आज्ञा को न मानना।

बगावत- विद्रोह।

वायरलेस— बिना तार संदेश भेजना।

तहत- साथ।

स्वायत्त- स्वतंत्र।

सिरजी- रची।

संहार- अंत।

हरकारा- डाकिया।

अल्प- थोड़ा, कम।

हदस- डर।

चाँग्मा- एक पेड़ का नाम।

अप्रतिकार- विरोध न करना।

पद्धति- तरीका।

जस का तस- ज्यों-का-त्यों।

दूरगामी- दूर तक जाने वाला।

अधीनता- गुलामी।

शरीक- सम्मिलित

रेगुलेशन- कानून।

मालगुजारी- कर।

फौजदारी- मारपीट।

वृत्तांत- हाल।

स्वराज्य- अपना राज्य।

छोर- किनारा।

दुर्गम- जहाँ जाना कठिन हो।

प्रीति- प्रेम।

वीरान- जहाँ लोग न रहते हों।

आबाद- बसी हुई।

अचरज- हैरानी।

वृत्ति- जीविका।

निर्वाण- वैराग्य।

अतर्क- तर्क से परे।

भव्य- विशाल।

आर्तनाद- पीड़ा भरी आवाज।

अट्टहास- ठहाका लगाना।

बख्शना- छोड़ना।

तलहटी- पहाड़ से नीचे का क्षेत्र।

महात्म्य- महिमा।

गजेटियर- राजपत्र।

बाहय- बाहरी।

© JCERT not to be republished

मान-मर्दन- कुचलना।

कूवत-सामर्थ्य, बल

किलोल- खेल।

अल्पकालिक- थोड़े समय के लिए।

शूल- काँटा

बरखा-बहार- वर्षा की बहार।

संहार- अंत।

मतवाला- मस्त।

नगाड़े बजाना- बैंड बजाना।

कामीजन- विलास करने वाले लोग।

पावस- वर्षा ऋतु का महीना।

लालित्य- सौंदर्य।

संवेदन- अनुभव।

कलपती- चीत्कार करती।

साध- इच्छा।

वंध्या- बेकार।

कुल- दो हलों से जोती जा सकने वाली धरती।

उलीचना - हाथ से बाहर फेंकना।

पहर- समय।

पल्ला- हिस्सा।

आड़- ओट।

तुषार- हिम

षडऋतु- छह ऋतुएं।

तुंग छेन- एक तरह का वाद्य यंत्र।

© JCERT not to be republished

प्रश्न उत्तर

प्रश्न १. इतिहास में स्पीति का वर्णन नहीं मिलता। क्यों?

उत्तर- स्पीति हिमाचल की पहाड़ियों में एक ऐसा दुर्गम स्थल है जहाँ पहुँचना सामान्य लोगों के वश में नहीं है। संचार माध्यमों एवं आवागमन के साधनों का अभाव है। अतः यहाँ दूसरे देशों की जानकारी नहीं होती। स्पीति का भूगोल अलंघ्य है। साल में आठ-नौ महीने बरफ़ रहती है तथा यह संसार से कटा रहता है। दुर्गम स्थान के कारण किसी राजा ने यहाँ हमला नहीं किया। इसका जिक्र सिर्फ राज्यों के साथ जुड़े रहने पर ही आता है। मानवीय गतिविधियों के अभाव के कारण यहाँ इतिहास नहीं बना।

प्रश्न 2: स्पीति के लोग जीवनयापन के लिए किन कठिनाइयों का सामना करते हैं?

उत्तर- स्पीति का जीवन बहुत कठोर है। यहाँ लंबी शीत ऋतु होती है।स्पीति हिमाचल की पहाड़ियों में एक ऐसा दुर्गम स्थल है जहाँ

पहुँचना सामान्य लोगों के वश में नहीं है। संचार माध्यमों एवं आवागमन के साधनों का अभाव है। अतः यहाँ दूसरे देशों की जानकारी नहीं होती। स्पीति का भूगोल अलंघ्य है। साल में आठ-नौ महीने बरफ़ रहती है तथा यह संसार से कटा रहता है। यहाँ जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं होती। लोग ठंड से ठिठुरते रहते हैं। यहाँ न हरियाली है और न ही पेड़। यहाँ पर्याप्त वर्षा भी नहीं होती। यहाँ साल में एक ही फसल उगा सकते हैं। जौ, गेहूँ, मटर व सरसों के अलावा दूसरी फसल नहीं हो सकती। किसी प्रकार का फल व सब्जियाँ पैदा नहीं होतीं। यहाँ रोजगार के साधन नहीं हैं। यहाँ की जमीन खेती योग्य है, परंतु सिंचाई के साधन विकसित नहीं हैं। अत: यहाँ के लोग अत्यंत जटिल परिस्थिति में रहते हैं।

प्रश्न 3: लेखक माने श्रेणी का नाम बौदधों के माने मंत्र के नाम पर करने के पक्ष में क्यों है?

उत्तर- लेखक माने श्रेणी का नाम बौद्धों के माने मंत्र के नाम पर करने के पक्ष में इसलिए है क्योंकि ध्वनि मंत्र" ओंम मणि पद्मे हुं"बौद्धों का बीज मंत्र है। इस मंत्र के उच्चारण से करुणा की उत्पत्ति होती है तथा इसका बड़ा महत्व है। इन पहाड़ियों में इस माने मंत्र का बहुत अधिक जाप होने के कारण इन श्रेणियों का नाम माने करने के पक्ष में है।

प्रश्न 4: ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं-इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने युवा वर्ग से क्या आग्रह किया है?

उत्तर- लेखक ने बताया है कि माने पर्वत श्रेणियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं, क्योंकि उनके जाप से यहाँ का वातावरण बोझिल व नीरस हो गया है। लेखक पहाड़ों व मैदानों से युवक-युवतियों को बुलाना चाहता है ताकि वे यहाँ आकर क्रीड़ा-कौतुक करें, प्रेम के खेल खेलें, जिससे यहाँ के वातावरण में ताजगी व उत्साह का संचार हों। चोटियों पर चढ़ने से जीवन अँगड़ाई लेने लगेगा। युवाओं के अट्टहास से चोटियों पर जमा आर्तनाद पिघलेगा।

प्रश्न 5: वर्षा यहाँ एक घटना है, एक सुखद संयोग हैं-लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- स्पीति में वर्षा नहीं होती। वहाँ के लोग वर्षा की आनंददायक स्थितियों से अनभिज्ञ हैं।यहाँ की धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है। स्पीति में साल में केवल एक फ़सल होती है। उपजाऊ और खेती के योग्य धरती का तो यहाँ अभाव नहीं है, परंतु सिंचाई का साधन है पहाड़ों से आ रहे नाले। वर्षा यहाँ के लोगों के लिए एक घटना है। इसीलिए लेखक ने इसे एक सुखद संयोग माना है। स्पीति की यात्रा के दौरान वहाँ की वर्षा देखने का सौभाग्य भी लेखक को मिला था। स्थानीय लोगों ने भी इसी कारण लेखक की यात्रा शुभ माना था।

प्रश्न 6: स्पीति अन्य पर्वतीय स्थलों से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर-

1. स्पीति मध्य हिमालय में स्थित है।
2. स्पीति के पहाड़ों की ऊँचाई 13000 से 21,000 फीट तक की है। ये अत्यंत दुर्गम हैं।

© JCERT not to be republished

3. यहाँ के दर्रे बहुत ऊँचे व दुर्गम हैं।

4. यहाँ साल में आठ-नौ महीने बर्फ जमी रहती है तथा रास्ते बंद हो जाते हैं।

5. यहाँ वर्षा नहीं होती तथा पेड़ व हरियाली का नामोनिशान नहीं है।

6. यहाँ सिर्फ दो ऋतुएँ होती हैं-वसंत व शीत ऋतु।

7. यहाँ परिवहन व संचार का कोई साधन नहीं।

8. यहाँ आबादी बेहद कम है। यहाँ प्रति किलोमीटर चार व्यक्ति रहते हैं।

9. यहाँ पर्यटक नहीं आते। अत: यहाँ का वातावरण उदास रहता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1: स्पीति में बारिश' नामक पाठ के रचयिता हैं-

(क) कृष्णनाथ

(ख) कृश्नचंद्र

(ग) शेखर जोशी

(घ) प्रेमचंद

उत्तर- (क) कृष्णनाथ

प्रश्न 2: कालिदास ने वर्षा का वर्णन किस रचना में किया था?

(क) ऋतु प्रसंग

(ख) ऋतु प्रहार

(ग) ऋतु संहार

(घ) ऋतु संदेश

उत्तर- (ग) ऋतु संहार

प्रश्न 3: स्पीति किस राज्य की एक तहसील है?

(क) हरियाणा

(ख) पंजाब

(ग) हिमाचल

(घ) राजस्थान

उत्तर- (ग) हिमाचल

प्रश्न 4: लद्दाख मंडल के दिनों में स्पीति का शासन कौन चलाता था?

(क) बोनो

(ख) टोनो

(ग) नोनो

(घ) पोनो

उत्तर- (ग) नोनो

© JCERT not to be republished

प्रश्न 5: लाहुल में कितनी ऋतुएँ होती हैं?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) पाँच

उत्तर- (क) दो

© JCERT not to be republished